संपादक की कलम से

चुनाव : भाजपा अपनी लीक पर चलेगी

केंद्र में सत्तारूढ़ भाजपा इस बार भी आम चुनाव में कुछ नया करने जाती दिख रही है।लोकसभा चुनाव में भले एन डी ए सरकार की बात कही जाए, भाजपा का पूरा प्रयास अपने दम पर सरकार बनाने का है। जो संकेत मिल रहे हैं, वे 2019 से पृथक नहीं हैं। जैसे कि जब पिछले लोकसभा चुनाव में जब भाजपा ने जब प्रत्याशियों की घोषणा की तो उसने अपने 268 में से 99 सांसदों यानी 36 प्रतिशत के टिकट एक झटके में काट दिए। वर्ष 2014 के चुनाव में भाजपा के 282 सांसद जीत कर लोकसभा पहुंचे थे, लेकिन कुछ सासंदों की मौत होने और कुछ उपचुनावों में हार के कारण उसके 268 सांसद ही बचे थे।

तब पार्टी ने जितने सांसदों के टिकट काटे, उनकी जगह सेवानिवृत्त अफसरशाहों, कलाकारों, क्रिकेटरों जैसे नए चेहरों को मैदान में उतारा। इनमें फिल्मी सितारे सनी देओल, रवि किशन, लॉकेट चटर्जी, गायक हंसराज हंस, क्रिकेटर गौतम गंभीर एवं अपराजिता सारंगी जैसे ब्यूरोक्रेट शामिल थे, जो 2019 में पहली बार चुनाव जीतकर सांसद बने।

अब 2024 के लोकसभा चुनाव में पार्टी 370 सीटें जीतने के लक्ष्य को हासिल करने के लिए ऐसे सांसदों के टिकट काटेगी जिनके एंटी इंकम्बेंसी के कारण हारने की संभावना बन रही है। आंतरिक सर्वे के आधार पर भाजपा के शीर्ष नेतृत्व ने कमजोर परिणाम वाले सांसदों के टिकट काटने का पूरा मन बना लिया है।

भाजपा उत्तर प्रदेश में अपना दल और राष्ट्रीय लोकदल के साथ मिलकर सभी 80 सीटें जीतना चाहती है, जहां पिछले चुनाव में वह 16 सीट हार गई थी। अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए भाजपा दूसरे दलों से जीताऊ उम्मीदवारों को तोड़ने से भी गुरेज नहीं करेगी। इसकी शुरूआत बहुजन समाज पार्टी के रितेश पांडे और झारखंड में कांग्रेस सांसद गीता कोड़ा से हो गई है।

भाजपा इस बार भी 75 साल से अधिक उम्र के साथ-साथ ऐसे सांसदों को भी मैदान में उतारने की इच्छुक नहीं है, जो अपनी सीट से कई बार जीत हासिल कर चुके हैं। पार्टी अब उन सीटों पर नए लोगों को मौका देना चाहती है। भाजपा ने पिछले लोक सभा चुनाव में 303 सीटें जीती थीं, लेकिन कुछ के विधानसभा चुनाव लड़ने के लिए इस्तीफा देने और कुछ उपचुनाव में हारने के कारण इस समय उसके 290 सांसद हैं। वर्ष 2019 के चुनाव में भी भाजपा ने 75 साल से अधिक उम्र के उम्मीदवार मैदान में नहीं उतारे थे।

इस कारण सुमित्रा महाजन, करिया मुंडा, एल के आडवाणी, कलराज मिश्र, बिजोय चक्रवर्ती, बीसी खंडूड़ी, शांता कुमार और मुरली मनोहर जोशी दिग्गज नेता रेस से बाहर हो गए थे। यदि इस बार भी यही रणनीति अपनाई गई तो पार्टी के 15 सांसद तो यूं ही बाहर बैठ जाएंगे, क्योंकि या तो वे 75 साल के हो चुके हैं या होने वाले हैं। इनमें हेमा मालिनी, संतोष गंगवार और रीता बहुगुणा जोशी आदि शामिल हैं।

इनके अलावा इस बार मेनका गांधी, वीरेंद्र कुमार, ब्रिज भूषण शरण सिंह जैसे सांसद हैं, जिन्होंने छह या इससे अधिक बार चुनाव जीता है। इसके आवा 11 सांसद पांच बार, 19 सांसद चार बार और 28 सांसद तीन बार चुन कर लोकसभा पहुंच चुके हैं। राष्ट्रीय जनता दल के साथ गठबंधन होने के कारण इस बार बागपत से सत्यपाल सिंह का टिकट भी कट सकता है।

यही नहीं कुछ सांसदों को इसलिए भी पीछे हटना पड़ सकता है, क्योंकि कुछ मंत्रियों का राज्यसभा कार्यकाल पूरा होने वाला है और उन्हें बनाए रखने के लिए लोकसभा के रास्ते सांसद बनाना होगा। इनमें धर्मेंद प्रधान, भूपेंद्र यादव, मनसुख मांडविया और पुरुषोत्तम रुपाला शामिल हैं।

अकबर हों या शाहजहां ,कोई नहीं बचेगा

@ राकेश अचल
achalrakesh1959@gmail.com

भारत तेजी से बदल रहा है। अब यहां एक नजर वाली सरकार अपना रंग दिखा रही है। अब देश में चाहे अकबर हों या शाजहाँ बचने वाले नहीं है। भले ही अकबर और शाहजहां को जहान से गए हुए सैकड़ों साल हो गए हैं लेकिन उनके नाम से हमारी सरकार आज भी नफरत करती है, बिदकती है। अब इस देश में रहने वाले तमाम अकबरों और शाहजहानों को केवल और केवल इस देश की अदालतों का सहारा है जो अभी भी आम आदमी को आम आदमी मानती हैं, उन्हें धर्म की नजर से नहीं देखतीं।

मेरी बात समझने के लिए आपको एक साथ अनेक खबरों को जोड़कर देखना होगा। पहली खबर डबल इंजन से चलने वाले उत्तर प्रदेश से बनती है। आपको पता है कि उत्तर प्रदेश में बुलडोजर संस्कृति है। यूपी की सरकार को अकबर के नाम से ही चिढ है। दुर्भाग्य से लखनऊ के कुकरैल नदी के किनारे बसी एक अवैध बस्ती का नाम अकबरनगर है। यहां 1068 से ज्यादा अवैध मकान और 50 से अधिक दुकानें बनी हैं। उत्तर प्रदेश सरकार इस कुकरैल नदी पर रिवरफ्रंट बनाना चाहती है। जाहिर है कि इसके लिए अकबर नगर को नेस्तनाबूद करना जरूरी है। सरकार की उदारता के चलते अकबर नगर में रहने वाले लोगों के पुनर्वास के लिए सभी को 15 लाख रुपये की कीमत वाला मकान 4.80 लाख में दिया जा रहा है। लेकिन अकबर नगर वाले यहां से जाना नहीं चाहते। फिर भी लखनऊ विकास प्राधिकरण की टीम ने अकबरनगर में 23 बुलडोजर लगाकर दो बड़े कॉम्प्लेक्स-शोरूम ढहा दिए।

इससे पहले अकबरनगर की अवैध बस्ती को गिराने की कार्रवाई दिसंबर महीने में हुई थी। लेकिन इलाहाबाद हाईकोर्ट ने अंतरिम रोक लगाते हुए बस्ती के लोगों को राहत दे दी थी। यहां लखनऊ के अकबर नगर में एलडीए की कार्रवाई पर रोक लगाने की मांग वाली याचिका पर सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने एलडीए से 4 मार्च तक कार्रवाई न करने को कहा है। सुप्रीम कोर्ट 4 मार्च को इस मामले में अगली सुनवाई करेगा। इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ बेंच के आदेश को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई है। इलाहाबाद हाईकोर्ट का आदेश आने के कुछ ही देर बाद एलडीए ने अपनी कार्रवाई को शुरू कर दिया है, अब यही यदि अकबर नगर न होकर रामकृष्ण नगर या दीनदयाल नगर होता तो बुलडोजर इनकी और देखते तक नहीं।

दूसरी खबर है उत्तर प्रदेश के ही हापुड़ में रहने वाले अब्दुल करीम टुंडा की। अब्दुल क्रीम एक जमाने में पिलखुवा में बढ़ई का काम करता था।

मुंबई में 1993 के सिलसिलेवार बम विस्फोट मामले के मुख्य आरोपी अब्दुल करीम टुंडा (81 वर्षीय) को गुरुवार, 29 फरवरी को अजमेर की विशेष टाडा अदालत ने सबूतों के अभाव में बरी कर दिया। मामले के दो अन्य आरोपियों इरफान अहमद और हमीर-उल-उद्दीन उर्फ हमीदुद्दीन को टाडा कोर्ट ने उम्रकैद की सजा सुनाई। सीबीआई अब्दुल करीम टुंडा के खिलाफ ठोस सबूत पेश करने में विफल रही।

बंगाल के सन्देश खाली उत्पीड़न के खलनायक शाहजहां खान को भी फिलहाल पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। भाजपा पिछले कई दिनों से इसी शाहजहां खान की गिरफ्तारी को लेकर राजनीति कर रही थी। हकीकत भी है और अफसाना भी की शाहजहां हों या अकबर हमेशा भाजपा की राजनीति के स्थाई पात्र रहते हैं।

संयोग कहें या दुर्भाग्य की देवभूमि उत्तराखंड में जहाँ डबल इंजिन की सरकार है वहां भी हल्द्वानी हिंसा के आरोप अकबर और शाहजहां के भाई बंधु हैं। हल्द्वानी हिंसा के कथित सूत्रधार अब्दुल मलिक है। वहां सरकार सो रही थी और मलिक भाई नोटरी पर सरकारी जमीनें बेच रहे थे वो भी भाजपा नेताओं के संरक्षण में। लेकिन दुर्भाग्य से जब हिंसा भड़की तो अब्दुल मलिक को भाजपा के नेताओं ने अनाथ छोड़ दिया, हालाँकि उनके साथ सरकारी जमीनों को खुर्दबुर्द करने से होने वाले लाभ में सभी बराबर के हिस्सेदार रहे। उत्तर प्रदेश में ज्ञानवापी का मामला भी अकबर और शाहजहां के कुनबे से ही बाबस्ता है।

मुझे कभी -कभी लगता है कि हमारी एकनजर वाली सरकार अकबर और शाहजहां की 20 करोड़ आबादी का आखिर करेगी क्या ? सरकारी पार्टी ने अपने यहां तो विधानसभा हो या लोकसभा या राजयसभा इन लोगों को मौका न देने का इरादा जाहिर कर ही दिया है। लगता है कि सरकार को इस 20 करोड़ की आबादी से अब कोई लेना-देना नहीं है। यदि होता तो एकनजर की सरकार जानबूझकर समान नागरिक संहिता लाने और स्पेशल मैरिज एक्ट को रद्द करने का उत्साह न दिखाती। यदि वाकई समदर्शी सरकार होती तो राम मंदिर जन्मभूमि विवाद सुलझने के बाद सरकार अयोध्या में जितना भव्य राम मंदिर बनाने में सक्रिय रही उतनी ही वहां नई मस्जिद बनवाने में भी सक्रिय भूमिका निभाती। लेकिन ये असम्भव था और है। सरकार को अकबरी वोट नहीं चाहिए। सरकार को तीसरी बार सरकार बनाने के लिए जितने 'नान अकबरी' वोट चाहिए वो उसके पास हैं। उसका काम तो चल ही जाएगा।

मजे की बात देखिये कि दो दशक तक न्याय का इन्तजार करने के बाद बरी हुए टुंडा के मन में कोई नफरत नहीं है, कोर्ट के फैसला आने के बाद अब्दुल करीम टुंडा ने मीडिया कर्मियों से बातचीत में कहा, 'कोर्ट ने मुझे बरी कर दिया है, कोर्ट की बहुत मेहरबानी। सच्चाईछुप नहीं सकती बनावट के उसूलों से, खुशबू आ नहीं सकती कागज के फूलों से...'। आपको बता दें कि पांच व 6 दिसंबर, 1993 को मुंबई से नई दिल्ली, नई दिल्ली से हावड़ा, हावड़ा से नई दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस, सूरत से बड़ौदा फ्लाइंग क्वीन एक्सप्रेस, हैदराबाद से नई दिल्ली आंध्र प्रदेश एक्सप्रेस ट्रेनों में सिलसिलेवार बम धमाके हुए थे। इस आतंकी बम धमाकों में दो यात्रियों की मृत्यु हुई थी।

भाजपा के झांसे में आकर अकबर और शाहजहां के तमाम वंशज, जैसे कांग्रेस के एक गुलाम नबी आजाद कांग्रेस से अलग हो गए और उन्होंने अपनी अलग पार्टी बना ली, लेकिन अब न वे घर के हैं और न घाट के। भाजपा में जो शाहनवाज रह भी गए हैं वे मजबूरी में हैं। उनके जैसे कितने लोग हैं जिनका भाजपा में अब कोई नामलेवा नहीं हैं और जो हैं वे भी मजबूर है। यदि समर्थन नहीं करेंगे तो वे भी घर के न घाट के रह पायंगे। भाजपा इन सबसे घर और घाट छीन लेने पर आमादा है।

आने वाले दिनों में अकबरों और शाहजहानों से जुड़े ऐसे अनेक मामले सामने आएंगे। इन सब से देश का मान बढ़ेगा या घटेगा ये हम नहीं जानते, लेकिन ये साफ है की हम जान-बूझकर उन लोगों को दण्डित कर रहे हैं जो न अकबर हैं, न बाबर हैं और न शाहजहां है। यदि वे अपराधी हैं तो अपराधी तो हर समाज में है। चंद शाहजहानों या मलिकों की वजह से पूरी की पूरी 20 करोड़ की आबादी को तो अपराधी मानकर उनके साथ अपराधियों या दोयम दर्जे के नागरिकों जैसा व्यवहार नहीं किया जा सकता ? यदि आप समान नागरिक संहिता ला रहे हैं तो उन्हें विधानसभाओं, लोकसभा और राजयसभा में भेजने से इंकार क्यों कर रहें हैं मिया ! आम चुनावों में उतरने से पहले इन सवालों का जबाब देने की हिम्मत भी दिखाई जानी चाहिए की नहीं भाईओ-बहनो !

रद्द होती भर्ती परीक्षाएं, धूमिल होती सरकार की छवि !

डॉ अजय कुमार मिश्रा

उत्तर प्रदेश पुलिस दुनियां की सबसे बड़ी संख्या बल वाली पुलिस है, जिसमें 2.25 लाख से अधिक कर्मचारी कार्यरत है` विभाग में चल रही भर्ती को सरकार ने रद्द करके आगामी 6 माह में पुनः परीक्षा की घोषणा की है` निसंदेह पुनः परीक्षा में सजगता देखने को मिलेगी, जिससे पेपर लीक को रोका जा सकेगा` पर इस विषय पर कुछ अधिक कहने और लिखने से पहले कुछ मूल तत्वों को भी जानना जरुरी है` कुल 60244 पदों की भर्ती के लिए परीक्षा फरवरी 16 से 18 के मध्य उत्तर प्रदेश के 75 जिलों में 2385 केंद्र बनाकर आयोजित हुयी थी` इस भर्ती के लिए दिसम्बर 2023 में विज्ञापन निकाला गया था` 48.17 लाख ऑनलाइन आवेदन 27 दिसम्बर 2023 से 16 जनवरी 2024 के मध्य प्राप्त हुए थे` इन प्राप्त आवेदनों में लगभग 2.5 लाख बिहार से, 43 लाख उत्तर प्रदेश से, 98,400 मध्य प्रदेश से, 74,769 हरयाणा से, 97,277 राजस्थान से, 42,259 दिल्ली से और 3404 आवेदक पंजाब से थे` किन्ही कारणों से लगभग 5.03 लाख आवेदक परीक्षा में शामिल नहीं हुए` इन सभी में महत्वपूर्ण यह भी है की इस भर्ती के लिए उम्र की बाध्यता 18 से 25 उम्र की थी` परीक्षा का निरस्त होना कई प्रश्नों को इक साथ जन्म देता है। पुलिस भर्ती परीक्षा में पहले दिन की परीक्षा से ही युवा पेपर लीक होने का आरोप लगा रहें थे परन्तु सरकारी तंत्र इस बात को स्वीकार नहीं कर रहा था। 1500 से अधिक शिकायत साक्ष्यों के साथ अलग झ अलग जगहों से भेजी गयी ` भारी संख्या में युवाओं का दल लखनऊ में भी धरने पर रहा` अत्यधिक विरोध के पश्चात सरकार ने परीक्षा को रद्द करने और पुनः परीक्षा कराने की घोषणा की जिसके पश्चात अभ्यर्थी उत्साहित भी दिखे, परन्तु यह सोचने और समझने का विषय है की जिस भर्ती में चयन के पश्चात अवसर प्राप्त होता उसी भर्ती को रद्द कराने के लिए युवाओं को लड़ना पड़ा। क्या यह पूरे प्रदेश के भर्ती प्रणाली पर बड़ा प्रश्न नहीं है ? उत्तर प्रदेश में नई भर्ती होने की परीक्षा का पेपर लीक होना अब आम बात बन गया है ` इसके पूर्व भी कई बार पेपर लीक हुआ है। सरकार कड़ी कार्यवाही करके या करने का भरोसा देकर अपना पल्ला झाड़ लेती है` यह कितना अनुचित और अव्यवहारिक है की सरकार अपनी ही गलतियों से नही सीख रही और कड़े प्रबंधन करने में विफल है जिसका खामियाजा लाखों लोगों को उठाना पड़ रहा है` अनेकों लोगों का एक साथ सपना टूटना कितना भयावह है इसका अनुभव आर्थिक, सामाजिक, और परिवारिक दबाव झेल रहा बेरोजगार युवा ही समझ सकता है। अव्यवस्था का आलम अक्सर देखने को मिलता रहता है ` दो लाख से अधिक युवाओं का परीक्षा केंद्र लखनऊ बनाया गया था जिससे रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड सभी जगह अव्यवस्था देखने को मिली अव्यवस्था का आलम यह था की अधिकांश युवाओं को अगले दिन वापस जाने का इंतेजार करना पड़ा।

` पिछले वर्ष सरकार ने दो करोड़ लोगों को आगामी वर्षो में रोजगार देने की बात कही थी` इसके अतिरिक्त प्रत्येक घर में एक सरकारी नौकरी देने की भी बात सामने आयी थी` प्रदेश ही नहीं बल्कि देश की भी सबसे नाजुक नब्ज रोजगार की है जिसके लिए प्रतिदिन धरना प्रदर्शन हो रहा है` यदि उत्तर प्रदेश की बात करें। तो कई अलग-अलग भर्तियों के अभ्यर्थी न केवल केस लड़ रहें है बल्कि कुछ के पक्ष में न्याय होने के बावजूद रोजगार नहीं प्राप्त कर सके` निजी क्षेत्रों में अवसर की कमी और नौकरी की असुरक्षा, भुगतान कम होना, और बढ़ती ठेका प्रणाली लोगों को सरकारी नौकरी के प्रति प्रेरित करती है` हाल के वर्षो में आयी कोरोना आपदा ने इसमें आग में घी डालने जैसा कार्य किया है` उत्तर प्रदेश में प्रति व्यक्ति आय वर्ष 2021-22 में रुपया 70,792 रही है जो महज बिहार राज्य से अधिक है` सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी फंड द्वारा जारी आकड़ों के अनुसार राज्य युवा श्रम भागीदारी कोरोना के पहले 41.2% थी जो की सितम्बर दिसम्बर 2022 में घट कर 22.4% रह गयी। राज्य सरकार को कई अन्य विकल्पों पर विचार करना चाहिए इसके लिए वह ऑनलाइन परीक्षा आयोजित कर सकती है, क्योंकि अधिकांश युवा आज कंप्यूटर के बेसिक ज्ञान से पूर्ण है` प्रश्नों के एक दो नही कई सेट तैयार किये जाये और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (अ.क.) का प्रयोग कर परीक्षा शुरू होने के कुछ सेकंड पहले प्रश्न पत्र लाइव किये जाये।

राज्य सरकार भर्ती बोर्ड के सभी उच्च अधिकारियों की जिम्मेदारी तय करें जिससे परीक्षा सफलतापूर्वक करायी जा सके` केंद्र सरकर कीकई इकाई है जो बिना दाग के वर्षो से सफल परीक्षा करा रही है उनका सहयोग भी लिया जा सकता है` परीक्षा में भागीदारी कम हो और राज्य में रोजगार के अवसर बढ़ाने के लिए उत्पादन क्षेत्र में कार्यरत कंपनियों को राज्य में अनुदान देकर आमंत्रित किया जाना चाहिए` निजी क्षेत्र में कार्यरत लोगों के लिए रोजगार सुरक्षा और योग्यता अनुरूप न्यूनतम भुगतान नियमावली बनाने से सरकार को रोजगार के क्षेत्र में लाभ होगा।

अंतरिक्ष से संचार क्रांति लाने का संदेश दे रहा इसरो

वर्ष 2023 भारत के लिए अंतरिक्ष में सफलता प्राप्त करने के उद्देश्य के रूप में बहुत ही महत्वपूर्ण रहा। यह बात सभी को विदित ही है कि 14 जुलाई 2023 को चंद्रयान-3 ने श्रीहरिकोटा में अवस्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से उड़ान भरी थी और भारतीय अंतरिक्ष यान ने 5 अगस्त 2023 को चंद्र कक्षा में निर्बाध रूप से प्रवेश किया। जब लैंडर ने 23 अगस्त 2023 को चंद्र दक्षिणी ध्रुव के निकट एक सफल लैंडिंग की तो यह भारत के लिए एक बहुत ही बड़ा व ऐतिहासिक कदम था। उल्लेखनीय है कि चंद्रयान-3 की चन्द्रमा की सतह पर सुरक्षित लैंडिंग के बाद इसरो द्वारा आदित्य-एल 1 सूर्य मिशन की लॉन्चिंग दुनियाभर में चर्चा का विषय रहे थे इसी क्रम में अब भारत सरकार ने हाल ही में गगनयान मिशन के तहत अंतरिक्ष में भारत की पहली उड़ान के लिए चयनित एयरफोर्स के चार पायलटों के नाम भी बताए हैं। इनमें क्रमशः ग्रुप कैप्टन प्रशांत नायर, ग्रुप कैप्टन अजीत कृष्णन, ग्रुप कैप्टन अंगद प्रताप और विंग कमांडर शुभांशु शुक्ला शामिल हैं, जिनके नाम स्वयं देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 27 फरवरी 2024 को केरल के तिरुवनंतपुरम स्थित विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र का दौरा करने एवं गगनयान मिशन की तैयारियों की समीक्षा करने के बाद जारी किए हैं। इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यह कहा कि, 'ये चार नाम या चार इंसान नहीं हैं। 140 करोड़ आकांक्षाओं को अंतरिक्ष में ले जाने वाली शक्तियां हैं। 40 साल के बाद कोई भारतीय अंतरिक्ष में जाने वाला है। इस बार टाइम भी हमारा है, काउंटडाउन भी हमारा है और रॉकेट भी हमारा है।' बहरहाल, जानकारी देना चाहूंगा कि गगनयान भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) का एक मिशन है और इस मिशन के तहत तीन अंतरिक्ष मिशनों को कक्षा में भेजा जाएगा। इन तीन मिशनों में से 2 मानवरहित होंगे, जबकि एक मानव युक्त मिशन होगा। यह भी जानकारी देना चाहूंगा कि अक्तूबर 2023 में अंतरिक्ष एजेंसी इसरो ने गगनयान के पहले टेस्ट व्हीकल एबॉर्ट मिशन-1 (टीवी-डी1) को भी लॉन्च किया था और वर्तमान में इसरो की नजर गगनयान मिशन पर है जिसके तहत भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों को अंतरिक्ष में ले जाया जाएगा। सच तो यह है कि गगनयान मिशन को कई चरणों के जरिए सफलता के अंजाम तक पहुंचाया जाएगा। दरअसल, गगनयान में क्रू एस्केप सिस्टम (सीईएस) सबसे खास है। इसरो के अनुसार, फ्लाइट टेस्ट व्हीकल अबॉर्ट मिशन1 में किसी अनहोनी की दशा में अंतरिक्ष यात्रियों को बचाने में यह क्रू-एस्केप प्रणाली काम आएगी। उड़ान भरते समय अगर मिशन में कोई भी गड़बड़ी हुई तो यह प्रणाली क्रू मॉड्यूल के साथ यान से अलग हो जाएगी, कुछ समय उड़ेगी और श्रीहरिकोटा से 10 किमी दूर समुद्र में उतरेगी। इसमें मौजूद अंतरिक्ष यात्रियों को नौसेना की ओर से समुद्र से सुरक्षित वापस लाया जाएगा। इसके बाद दूसरा परीक्षण वाहन टीवी-डी2 मिशन और गगनयान (एलवीएम3-जी1) का पहला मानव रहित मिशन होगा। परीक्षण वाहन मिशन (टीवी-डी3 और डी4) की दूसरी श्रृंखला और रोबोटिक पेलोड के साथ एलवीएम3-जी2 मिशन की अगली योजना बनाई गई है। एजेंसी के मुताबिक, चालक दल मिशन की योजना सफल परीक्षण वाहन के नतीजे और उन मिशनों के आधार पर बनाई गई है जिनमें कोई चालक दल नहीं है। दरअसल इसरो इस मिशन के लिए लगातार कड़ी मेहनत कर रहा है और किसी भी हाल और परिस्थितियों में अंतरिक्ष यात्रियों को खोना नहीं पड़े इसके लिए इसरो द्वारा छह परीक्षणों की एक श्रृंखला तैयार की गई है। जानकारी देना चाहूंगा कि पिछले साल अक्टूबर में हुए एक अहम परीक्षण में यह सामने आया है कि रॉकेट में गड़बड़ी होने पर चालक दल सुरक्षित बाहर निकल सकता है। बहरहाल, पाठकों को यह भी विदित हो कि गगनयान देश का पहला मानव अंतरिक्ष उड़ान मिशन है जिसके तहत चार अंतरिक्ष यात्री अंतरिक्ष में भेजे जायेंगे । मीडिया के हवाले से यह सामने आ रहा है और इस मिशन को वर्ष 2024 के आखिर या वर्ष 2025 की शुरूआत तक अंतरिक्ष में भेजा जा सकता है। इसी साल यानी कि वर्ष 2024 में मानव रहित परीक्षण उड़ान भरी जायेगी, जिसमें एक व्योममित्र रोबोट को भेजा जाएगा। बताता चलूं कि गगनयान मिशन तीन दिवसीय मिशन है। मिशन के लिए 400 किलोमीटर की पृथ्वी की निचली कक्षा पर मानव को अंतरिक्ष में भेजा जाएगा और फिर सुरक्षित पृथ्वी पर वापस लाया जाएगा। यहां यह भी जानकारी देना चाहूंगा कि गगनयान मिशन के सफल होने पर भारत उन देशों की श्रेणी में शामिल हो जाएगा, जिन्होंने खुद चालक दल अंतरिक्ष यान लॉन्च किया है। बताता चलूं कि अभी तक अमेरिका, रूस और चीन ही यह काम कर पाए हैं। यहां यह बात कहना गलत नहीं होगा कि आज इसरो संपूर्ण विश्व में अंतरिक्ष के क्षेत्र में एक मिसाल बनकर उभर रहा है और अंतरिक्ष मिशनों का लगातार भारतीयकरण(स्वदेशीकरण) हो रहा है। हम अंतरिक्ष के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की ओर लगातार अग्रसर हैं और हमने काफी हद तक मिशन गगनयान का भारतीयकरण कर दिया है। यह इसरो के वैज्ञानिकों की बड़ी सफलता है। इसरो की पूरी टीम इसके लिए बधाई की पात्र है। हमारे लिए इससे बेहतर और बड़ी उपलब्धि और भला क्या हो सकती है कि गगनयान मिशन के लिए प्रयुक्त किए जाने वाले अधिकतर पुर्जे हमारे देश भारत में ही बने हैं। सच तो यह है कि इसरो की उपलब्धियां हम सभी का सिर संपूर्ण विश्व में ऊंचा करतीं हैं। जानकारी देना चाहूंगा कि चालीस साल पहले हमारे देश के राकेश शर्मा अंतरिक्ष में जाने वाले पहले भारतीय थे। यहां पाठकों को यह भी जानकारी देना चाहूंगा कि उस समय अंतरिक्ष से सोयूज टी-11 की क्रू के साथ ज्वॉइंट कॉन्फ्रेंस के जरिए देश ने पहली बार अंतरिक्ष में मौजूद अपने नागरिक(राकेश शर्मा) के साथ बात की थी। उस समय की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने राकेश शर्मा ने पूछा था कि अंतरिक्ष से भारत कैसा दिखता है? तो उन्होंने हिंदी में जवाब दिया था- 'सारे जहां से अच्छा, हिंदोस्ता हमारा।' उल्लेखनीय है कि राकेश शर्मा को 'हीरो ऑफ द सोवियत यूनियन अवॉर्ड' से भी नवाजा गया और वो इकलौते भारतीय हैं, जिन्हें ये सम्मान मिला। इसके साथ ही उन्हें अशोक चक्र से भी सम्मानित किया गया। हाल फिलहाल, हमारे देश का चंद्रयान-3 मिशन चांद के उस दक्षिणी हिस्से पर उतरा, जहां इससे पहले अमरीका और रूस जैसे अंतरिक्ष खोजी देशों का कोई यान नहीं उतर पाया था। रूस ने हमारे साथ-साथ ऐसा ही अभियान लांच किया था, लेकिन वह असफल रहा। हम अंतरिक्ष के क्षेत्र में लगातार सफलता के झंडे गाड़ रहे हैं। हमारा आदित्य - एल 1 अभियान(सूर्य मिशन) धरती से 15 हजार किलोमीटर दूर अवस्थित होकर सूर्य की जांच-पड़ताल कर रहा है। आज अंतरिक्ष अभियानों का लगातार व्यवसायीकरण हो रहा है, विश्व के अनेक देश हमारे इसरो के अभियानों में लगातार रूचि दिखा रहे हैं और अपने उपग्रह प्रक्षेपित करवा रहे हैं। आज हमारा इसरो विश्व के अनेक देशों के उपग्रह प्रक्षेपित करके अंतरिक्ष से संचार क्रांति लाने का संदेश दे रहा है और अब तो निजी निवेशकों को भी इस अभियान यात्रा में शामिल होने का संदेश दे दिया गया है। निःसंदेह वर्ष 1969 में भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान (इसरो) की स्थापना के बाद भारत लगातार अंतरिक्ष में ऐतिहासिक उपलब्धियां हासिल कर रहा है। जरूरत बस इस बात की है कि बेहतर अंतरिक्ष बुनियादी ढाँचे के निर्माण हेतु अधिक से अधिक बजट की जरूरत की पूर्ति होती रहे और साथ ही साथ इसरो के अभियानों को सरकार द्वारा पर्याप्त समर्थन के अलावा निजी भागीदारियों से भी जोड़ना होगा।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर,कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

खुद शिकारी शिकार हो गया

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा

अखबार में कितना सच और कितना झूठ छपा है इसे जानने के लिए केवल पढ़ा-लिखा होना काफी नहीं होता। पढ़े-लिखे एक ही खबर को अलग-अलग समाचार पत्रों में अलग-अलग तरह से पढ़कर अपना माथा फोड़ते रहते हैं। पढ़ा-लिखा होना गर्व की बात है। उस गर्व का गुबार तो उस समय निकल जाता है जब छपी सामग्री समझ में न आने पर खुद की पढ़ाई पर लानत पैदा होती है। समाचार के पहले दो-तीन पन्ने झूठ छापने की होड़ में लगे रहते हैं। जो जितना झूठ छापता है वह उतना विज्ञापन पाता है। सच छापने वाले के दफ्तर ईडी, इनकम टैक्स वाले अपना छापा लिए पहुँच जाते हैं। अगले दिन से सच छापने वाला खुद को झूठा साबित करने के लिए सड़क पर आ जाता है। इसीलिए समझदार लोग क्लासीफाइफ पढ़ते हैं। वैसे ये भी झूठे होते हैं, लेकिन पहले तीन पन्नों की तुलना में बहुत बेहतर होते हैं। ऐसे झूठ से सेप्टिक नहीं होता। इसी क्लासीफाइड को पढ़ते हुए अचानक मेरी निगाह एक विवाह के विज्ञापन से जा टकराई। चट मंगनी पट ब्याह मैरेज ब्यूरो को दस हजार भरकर जैसे-तैसे लड़की का नंबर हासिल किया। मैरेज ब्यूरो वाले का हवाला देते हुए लड़की की पसंद-नापसंद के बारे में बात करते हुए उसे फोन पर हाय-हैलो किया। पता लगाने पर मालूम चला कि लड़की के पिता का देहांत हो गया है। यह सुनकर ऊपर से दुख और भीतर से खुशी हुई।

बिन बाप की बेटी पर डोरे डालना आसान होता है। माँ नौकरी करती थी। कामकाज करना किसी के लिए परिवार चलाने का कारण होता है तो कुछ के लिए उनके पीठ पीछे गुलछर्रे उड़ाने का बहाना। पता नहीं ऐसी स्थिति में कुछ लोग इंसान से साँप कब बन जाते हैं। चिड़िया की माँ उधर दाने की खोज में निकली इधर साँप चिड़िया की ओर।

खाली हाथ किसी के घर जाना बुरी बात है। अपने मतलब की चीज उसके मतलब की बताकर मिलना तो और बुरी बात है। वह क्या है न कि कुछ बुरा करने के लिए भी पहले पहल कुछ अच्छा करना पड़ता है।

मार्ग प्रशस्त

चलने से पूर्व कई योजनाएं बनाई,
जीवन में मिले खुशी चाहे तन्हाई,
बंजर धरती चाहे हो पथराई,
लहूलुहान पैरों से लकीर बनाई,
भयावान जंगल में तान भरूंगा,
सोए हुए सपनों को पूरा करूंगा,
तन और मन को करूंगा स्वस्थ,
कठिन परिश्रम से कर मार्ग प्रशस्त।

तूफान से भरी नदी का रास्ता मोडूंगा,
चीरकर सीना किनारे जोडूंगा,
भले मुश्किलें परीक्षा लेकर देखे ,
भाले तलवारें घुटने टेके,
खुद कदम रास्ता बना लेंगे,
भावी पीढियां को मार्गदर्शन देंगे,
दावानल की आग को कर ध्वस्त
कठिन परिश्रम से कर मार्ग प्रशस्त।

पहाड़ों पर चढ़ने के रास्ते हमें आते,
हारे हुए लोगों को हम पता बताते,
सार है जीवन का दुखों से लड़ना,
समय प्रतिकूल तो छोड़ झगड़ना,
नहीं बन पत्थर का लकीर,
छोड़कर सब कुछ बना फकीर,
खड़ी हुई अटकलें को कर नष्ट,
कठिन परिश्रम से कर मार्ग प्रशस्त।

चलते ही जाना है रुकना नहीं काम,
सोए हुए इंसानों का नहीं होता नाम,
नई-नई बाधाओं से होता नित सामना,
दूसरों के भरोसे की न कर कामना,
खुद ही उठाना पड़ेगा कर्म का कुदाल,
कस ले कमर और पगड़ी संभाल,
न हिम्मत हार भले उठाने पड़े कष्ट,
कठिन परिश्रम से कर मार्ग प्रशस्त।

- डॉ.विनोद कुमार शर्मा, चंडीगढ़।